



सन् 1984 में इंदिरा गांधी की हत्या के बाद हुये भीषण सिख नरंसहार में देशभर में लगभग पांच हजार सिखों के घर द्वारा, दुकानें जलाते हुये उन्हें भारी संख्या में जिन्दा जला दिया गया था।

34 साल बाद दिल्ली के इस सिख विरोधी दंगों के किसी दोषी को फांसी की सजा सुनायी गयी है। वहाँ एक अन्य को उम्र भर सलाखों के पीछे रहना पड़ेगा। अदालत ने दोनों पर 35–35 लाख रुपये का जुर्माना भी लगाया है।

उल्लेखनीय है कि दिल्ली पुलिस ने सन् 1994 में यह केस बंद कर दिया था। सिख विरोधी दंगों से जुड़े कुछ मामलों में सन् 2015 में गृह मंत्रालय द्वारा गठित स्पेशल जांच दल (एस.आई.टी.) ने मामले की दुबारा जांच कर आरोपपत्र दाखिल किया था।

31 अक्टूबर सन् 1984 को तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा

१९८४ के सिख नरसंहार में एक को फांसी

गांधी की हत्या उनके सिख आरक्षकों ने कर दी थी। अगले ही दिन इसकी प्रतिक्रिया स्वरूप एक नवम्बर को दिल्ली और देश के अन्य हिस्सों में सिख विरोधी दंगे भड़क उठे थे। इन दंगों के कारण देश के कई राज्यों में हत्या और आगजनी जैसी वारदातें हुई थी।

34 साल से कांग्रेस अपराधियों को बचा रही थी। भाजपा ने सन् 2015 में एस.आई.टी. गठित की थी उसमें मामले की जांच ईमानदारी से की गयी है जिसकी वजह से दोषियों को सजा हो सकी।

स्व. प्रधानमंत्री राजीव गांधी ने अपने भाषण में कहा था कि जब बरगद का पेड़ गिरता है तो धरती हिलती है। कांग्रेस पार्टी ने आज तक उनके इस भाषण से अपने आपको अलग नहीं किया है। सरकार ने योजनाबद्ध और सुनियोजित तरीके से इस बात की पूरी कोशिश की कि सन् 1984 के

नरसंहार के आरोपियों के खिलाफ कोई प्रमाणिक कार्यवाही नहीं हो। कांग्रेस ने इसके लिये सन् 1985 में रंगनाथ कमीशन बनाया और उन्होंने अपनी जांच में कहा ये संगठित अपराध नहीं था। उन्होंने अपनी रिपोर्ट में कहा था कि कुछ अफसर भीड़ को नियंत्रित नहीं

कर सके जिसके चलते ये हुआ। बाद में कांग्रेस ने उन्हें राज्यसभा सांसद बनाकर पुरुस्कार दिया था।

वहीं इस फैसले के आने के बाद राजनीति गर्मा गयी है। भाजपा ने जबाव मांगा है कि कांग्रेस बतलाये कि उसने अपने 24–25 वर्ष के कार्यकाल में सिखों को न्याय दिलाने के लिये कौन–कौन से कदम उठाये, कमलनाथ को पंजाब के प्रभारी पद से हटाने की कौन सी मजबूरी थी? वही शिरोमणि अकालीदल के नेता सुखबीर बादल ने कहा है कि एस.आई.टी. को सोनिया गांधी को एक साजिश कर्ता के रूप में सामना करना चाहिये।

रंगे शियार हैं ये शहरी नक्सली

तालिवान जैसे शब्दों को गढ़ने वाली कांग्रेस के नेताओं ने पिछले दिनों हिन्दू पाकिस्तान की बात उछालकर अपनी वैचारिक दरिद्रता और घटिया सोच का प्रमाण दे ही दिया है। हिन्दुत्व को जाने बिना केवल तुच्छ स्वार्थों के लिये यह तुष्टीकरण की महज शर्मनाक पराकाष्ठा है।

ये हिन्दुत्व के बारे में सतही समझ रखने वाले क्या ये नहीं जानते कि हिन्दुत्व की समग्रता और व्यापकता रहीम, रसखान, कबीर, जायसी से लेकर

क्योंकि सन् 1984 में दंगों की प्लानिंग उनके निवास पर हुयी थी। और उनके पति उस समय सत्ता में थे। केप्टन अमरिन्दर सिंह को भी चाहिये कि वह सोनिया गांधी को लाई डिटेक्टर टेस्ट का सामना करने के लिये कहे।

केन्द्रीय मंत्री रविशंकर प्रसाद ने भी आरोप लगाया कि कांग्रेस ने जांच में हमेशा रोड़ अटकाये। उसने कभी पीड़ितों को न्याय दिलाने की कोशिश नहीं की। इसके पीछे अपने लोगों को बचाना था।

जबलपुर में भी सिख नेताओं ने एक पत्रकार वार्ता में कहा कि हम नहीं भूले हैं सन् 1984 के दंगे का दर्द। कांग्रेस नेता जगदीश राईटलर, एच.के.एल. भगत, सज्जन कुमार, कमलनाथ जैसे बड़े नेताओं ने खुलकर दंगों को हवा दी थी।



कांग्रेस राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से डरी हुयी क्यों है? कांग्रेस ने अपने चुनावी घोषणा पत्र में यह कहकर कि उसकी सरकार मध्यप्रदेश में आने पर वह सार्वजनिक स्थलों पर लगने वाली संघ की शाखाओं पर प्रतिबंध लगायेगी। संघ से उस कांग्रेस को कैसा डर जो नक्सलियों को क्रान्तिकारी बताती है और आतंकवादियों को 'जी' शब्द लगाकर आदर देती है। उसे संघ से इतना डर क्यों सता रहा है।

'हिन्दू आतंकवाद' हिन्दू

उस्ताद विस्मिल्लाखान तक शामिल रहे हैं। हिन्दुत्व ने कभी किसी के साथ भेदभाव नहीं किया है। ओछी मानसिकता और सतही बुद्धि के लोग इसे कभी नहीं समझ सकेंगे। दूसरी तरफ हैं सेक्यूलरिटी के उद्घोषक जो शहरी नक्सल के सच को उजागर न होने देने के लिये भरसक प्रयास करते रहते हैं। इन्हें सामाजिक कार्यकर्ता, मानवाधिकार कार्यकर्ता इतिहासकार, बुद्धिजीवी, जनवादी, प्रगतिशील आदि नामों के विशेषणों को तगमा लगाया जाता रहा है।



नारी शक्ति का

ऐसा ही एक दिव्य

भारतीय संस्कृति का आधारस्तम्भ, भारतीय नारियों को कहा जा सकता है। भारतीय नारियों ने अपने प्राणों को गंवाने के बाद भी भारतीय संस्कृति के पावन प्रवाह को अविरल एवं अक्षुण्ण बनाए रखा है। भारतीय संस्कृति ने भी नारियों को देवी समान स्थान दिया और धरती माँ से लेकर भारतमाता के रूप में तथा माँ गंगा से लेकर माँ गायत्री के रूप में जनसामान्य के सम्मुख रखा है। भारत ही संभवतया ऐसा अकेला राष्ट्र है, जहां नारी शक्ति को देवताओं से पहले रखकर पूजने की परंपरा रही है। सीताराम, गौरीशंकर, राधागोविंद जैसे श्रद्धासित संबोधन उसी परिपाटी का प्रतीक कहे जा सकते हैं।

नारियों अपरिमित शक्ति एवं क्षमता सम्पन्न हैं। मानवीय जीवन का कोई भी आयाम लिया जाए, प्रत्येक में भारतीय नारियों द्वारा कुछ ऐसे कीर्तिमान स्थापित किए गए हैं, जिन्हें विश्व इतिहास में किसी भी व्यक्तित्व से तौलकर देखा जाए तो वे सदा श्रेष्ठ ही सिद्ध होंगे। बुद्धिमत्ता का प्रतीक गार्गी या अपाला हों, साहस का प्रतीक रानी लक्ष्मीबाई या रानी अहिल्याबाई हों, संघर्ष की प्रतीक माँ सीता या सती सावित्री हों, अथवा व्रतशीलता का प्रतीक गांधारी या अनसूया हों—भारतीय इतिहास के प्रत्येक अध्याय में नारी शक्ति, अपना विजयधर्ज फहराती दीख पड़ती है। शक्ति संरक्षण का यह वर्ष, बिना नारी शक्ति की अभ्यर्थना के पूर्ण नहीं हो सकता।

परम वंदनीया माताजी का जीवन आदर्श प्रत्येक गायत्री परिजन के सम्मुख है तथा उन्हें ही प्रेरणास्रोत मानते हुए प्रत्येक भारतीय नारी को उनके अंदर निहित शक्ति को जगाते हुए एक संकल्प लेकर आगे बढ़ने की आवश्यकता, इस वर्ष है। कुछ ऐसी ही अन्य प्रसिद्ध भारतीय नारियों के व्यक्तित्वों को यहां बताया जा रहा है, ताकि उन प्रातःस्मरणीय नारियों का व्यक्तित्व, इस वर्ष हमारे अंतस् में शक्ति जागरण का उद्देश्य पूरा कर सके।

महाकोशल संदेश

अभ्युदय

आवश्यकता है।

ऐसा ही एक और प्रेरणास्पद व्यक्तित्व सती सावित्री का है। सर्वविदित है कि उन्होंने पति रूप में सत्यवान का चयन किया और जब देवर्षि नारद ने यह कहकर उनके विश्वास की परीक्षा लेनी चाही कि सत्यवान की आयु मात्र एक वर्ष और है, अतः वो किसी अन्य वर का चयन कर लें तो यह सुनकर सती सावित्री ने धैर्यपूर्वक उत्तर दिया—“देवर्षि! भारतीय नारी मात्र एक बार अपने हृदय को अर्पित करती है। यदि अपने सतीत्व की रक्षा के लिए मुझे मृत्यु से भी जूझना पड़ेगा तो मैं वह भी करने को तैयार हूँ।”

जब वह दिन आया, जिस दिन स्वयं भगवान यम सावित्री के पति सत्यवान का जीवन लेने, वन में पहुंचे तो सावित्री भी उनके पीछे चल पड़ी। यम के मना करने पर भी सावित्री नहीं डगमागाई और यह कहकर साथ चलती रही कि जहां मेरे पति जा रहे हैं या दूसरा कोई उन्हें ले जा रहा है—मैं वहीं जाऊँगी। यम ने प्रसन्न होकर उन्हें वरदान रूप में उनके अंधे श्वसुर को आंखें दीं, साम्राज्य दिया और सावित्री से कहा कि अब तो लौट जाए, परंतु उस रिति में भी देवी सावित्री ने उत्तर दिया—

न कामये भर्तृविनाकृता
सुखं

न कामये भर्तृविनाकृता
दिवम् ।

न कामये कामये

भर्तृविनवाकृता श्रियं

न भर्तृहीना व्यवसामि

जीवितुमि च्छसि ॥

अर्थात्—मैं बिना पति के सुख नहीं चाहती, बिना पति के स्वर्ग नहीं चाहती, बिना पति के दृष्टि नहीं चाहती और मैं बिना पति के जीवन भी नहीं चाहती। उनकी निष्ठा व संकल्प के आगे भगवान यम को ही हार माननी पड़ी और सत्यवान को जीवित करना पड़ा। अपने संकल्प के आगे मृत्यु को भी परास्त करने वाली शक्ति का प्रतीक भारतीय नारियां रहीं हैं। इस शक्ति संरक्षण वर्ष में भारतीय नारियों को एक वैसी ही शक्ति अपने भीतर

जगाने की आवश्यकता है।

भारतीय इतिहास के इन गौरवशाली पृष्ठों पर एक और जाज्वल्यमान तारक के रूप में सती अनसूया का उदाहरण देखने को मिलता है, जो महर्षि अत्रि की पतिव्रता पत्नी थीं। प्रसिद्ध कथा है कि एक बार ब्रह्माणी, गौरी एवं लक्ष्मी में तय दुआ कि सती अनसूया के पतिव्रत धर्म की परीक्षा लेने के लिए अपने—अपने पतियों, यथा भगवान ब्रह्मा, भगवान शिव एवं भगवान विष्णु को भेजा जाए। जब त्रिमूर्ति सती अनसूया के सम्मुख साधु वेश में पहुंचे तो उन्होंने उनको भोजन प्रदान किया। तीनों देवों ने माँ अनसूया को धर्मसंकट में डालने के उद्देश्य से एक विचित्र शर्त रखी कि वे भोजन तभी ग्रहण, करेंगे, जब माँ अनसूया निर्वस्त्र होकर भिक्षा दें।

माँ अनसूया ने परमात्मा को स्मरण करते हुए कहा कि यदि मेरा पतिव्रत धर्म आज तक अटूट रहा है तो आप उसे सदा अक्षुण्ण रखें और साथ ही सामने खड़े साधुओं की मर्यादा भंग न हो, इस हेतु इन तीनों को शिशुवत कर दें, ताकि मैं अपने धर्म से विमुख हुए बिना इनकी वचनपूर्ति कर सकूँ। इतिहास साक्षी है कि उनके संकल्प में इतना बल थाकि सुष्टि के तीनों नियंता देवता, तुरंत ही बालरूप में आ गए। आज भारतीय समाज को ऐसी ही संकल्प की धनी नारी शक्ति की आवश्यकता है कि जिसके संकल्प बल के आगे स्वयं त्रिमूर्ति को झुकना पड़े।

ऐसी ही नारी शक्ति के उदाहरणों के रूप में सती दमयंती, सती शांडिल्य, माँ अरुंधती, देवी देवहृति जैसी प्रसिद्ध नारियों के नाम भारतीय शास्त्रों में देखने को मिलते हैं, जिनमें से प्रत्येक का जीवन एक अतुलनीय शक्ति का प्रतीक था। शक्ति संरक्षण के इस वर्ष में भारत की नारी शक्ति को जगाने की एवं दूसरों को जगाने की आवश्यकता है। यदि इस देश की देवियाँ जाग गईं तो यह युग स्वयं ही बदलता चला जाएगा।



मुसीबतों को दूर भगाएं

मुसीबतें हर किसी के जीवन में आती हैं, लेकिन इनका मुकाबला कैसे किया जाए? अपने जीवन में मुसीबतें कभी तो हमारे बुलाने से आती हैं और कभी—कभी अचानक चुपके से भी हमारे जीवन में प्रवेश कर जाती हैं। मुसीबतें चाहे किसी भी रूप में हमारे जीवन में आएं, हमें उन्हें सुलझाना आना चाहिए, उनका हल ढूँढना आना चाहिए, अन्यथा मुसीबतें हमें अपनी गिरफ्त में ले लेती हैं और हम फिर उनके समक्ष असहाय—सा महसूस करते हैं।

जिस तरह बिल्ली के समक्ष उसका शिकार चूहा जैसे ही उपस्थित होता है, तो चूहे के लिए बिल्ली एक बहुत बड़ी मुसीबत होती है, जो उसके प्राण ले सकती है। यदि चूहा, बिल्ली के समक्ष असहाय महसूस करता है, अपने होश—हवास खो देता है तो वह उसका ग्रास बन जाता है, लेकिन यदि चूहा अपने होश—हवास के साथ भागने का प्रयत्न करता है, बचने का प्रयास करता है, तो इस प्रयास में वह अपने प्राण बचा सकता है। चूहे में वह सामर्थ्य होती है कि वह बिल्ली से भागकर अपने प्राण बचा सकता है, लेकिन जब वह बिल्ली के समक्ष आत्मसमर्पण कर देता है, अपनी असमर्थता को प्रकट कर देता है तो फिर वह कुछ नहीं कर सकता और यदि उसे अपनी सामर्थ्य पर भरोसा होता है तो वह भागने में सफल हो सकता है।

मुसीबतें भी हमारी जिंदगी में इसी तरह कभी अचानक आ जाती हैं तो हमारे गले का फंदा बन जाती हैं। यदि उस समय हम अपने होश—हवास खो देते हैं, असहाय, हताश महसूस करते हैं तो वो हमें अपनी गिरफ्त में ले लेती हैं, लेकिन यदि हम उनका डटकर मुकाबला करते हैं तो वे अपने कदम पीछे हटाने के लिए मजबूर होती हैं और अंततः हमारे जीवन से पलायन कर जाती हैं।

मुसीबतों के समय मन में किसी भी तरह की नकारात्मकता को प्रश्न नहीं देना चाहिए, बल्कि सकारात्मकता के साथ रहना चाहिए और इसके लिए सकारात्मक चिंतन बढ़ाने वाली पुस्तकों को पढ़ना चाहिए। अच्छे लोगों के साथ रहना चाहिए, पॉजिटिविटी बढ़ाने वाले वीडियो देखना चाहिए, अनुभवी लोगों से सलाह लेनी चाहिए और वे सभी उपाय करना चाहिए, जो हमारे सकारात्मक चिंतन को बढ़ाएं। इन प्रयासों में ही हमें अपनी मुसीबतों को दूर करने का उपाय मिल जाएगा और हमारी आधे से ज्यादा समस्या दूर हो जाएगी।

मुसीबतों के समय अपनी दिनचर्या की शुरूआत नए ढंग से करें; क्योंकि यदि बीते हुए दिन की असफलता व निराशा को हम पकड़े रहेंगे तो हम अपने नए दिन को भी व्यर्थ कर देंगे। इसलिए बीते हुए दिनों के बारे में सोचते हुए समय व्यर्थ करने से अच्छा है कि हम अपने आने वाले समय को बेहतर बनाने के विषय में सोचें। बीते हुए दिनों से हम सबक ले सकते हैं, लेकिन उनके बारे में हर पल सोचकर, दुःखी होकर हम आगे नहीं बढ़ सकते।

हमारी असफलताएं ही हमारे जीवन में मुसीबतें लेकर आती हैं और इन असफलताओं का कारण हमारी कुछ खामियां व कमियां होती हैं, जिन्हें दूर करना जरूरी होता है, लेकिन इन कमियों पर ही सोचते रहने के बजाय यदि हम अपनी खूबियों पर ध्यान दें और उन्हें और विकसित करें तो हम ज्यादा अच्छे से अपनी मुसीबतों को दूर कर सकते हैं। जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण यही है कि हम अपने जीवन की 80 प्रतिशत खूबियों के बारे में सोचें न कि 20 प्रतिशत कमियों के बारे में। यदि हम अपने जीवन की 20 प्रतिशत कमियों को दूर करने के पीछे लगेंगे तो अपनी बहुत सारी ऊर्जा को व्यर्थ कर देंगे। उसके बजाय यदि हम 80 प्रतिशत खूबियों को सुविकसित करने में लगेंगे

तो धीरे—धीरे 20 प्रतिशत की कमियों को भी दूर कर पाएंगे और 100 प्रतिशत के लक्ष्य को प्राप्त कर पाएंगे।

मुसीबतों की घड़ियों में जूँझते समय धैर्य की बहुत आवश्यकता होती है। धैर्य के अभाव में हमारे आधे से अधिक प्रयास व्यर्थ व निर्थक हो जाते हैं। हमारे प्रयास तभी सफल होते हैं, जब धैर्य के साथ सही समय पर वे कदम उठाएं जाएं, जो हमारे लिए जरूरी हैं। धैर्य हमें विवेक प्रदान करता है और सही कदम उठाने में हमारी मदद करता है अन्यथा हड्डबड़ाहट व जल्दबाजी में अक्सर गलत कदम पड़ जाते हैं, जो हमारे बने—बनाए कार्य को बिगड़ देते हैं और कई तरह की मुसीबतों को बिना बुलाए ही आमंत्रित कर लेते हैं।

मुसीबतें आती तो हैं हमारी गलतियों की वजह से, लेकिन ये हमें बेचैन कर देती हैं, हमें बेहोशी से होश में लाती हैं, हमारी कमियों को उजागर करती हैं और कठिन प्रयास करने के लिए प्रेरित करती हैं। इसलिए मुसीबतों के कठिन पलों से सदैव सीखना चाहिए, उन्हें सदैव स्मरण रखना चाहिए और उनका डटकर मुकाबला करना चाहिए, ताकि पुनः वैसे हालात न बनें और दोबारा उस रूप में उनका आगमन न हो।

जब भी हमारे सामने कोई मुसीबत आती है तो हम यही सोचते हैं कि इन हालातों से निपटने के लिए हमें अपने अंदर कोई नया गुण विकसित करना होगा, कोई नई तरकीब सोचनी होगी। ऐसा करने में समय अधिक व्यर्थ होता है, इसलिए ऐसा करने के बजाय उचित यही होगा कि पहले हम अपने अंदर मौजूद खूबियों के सहारे उनका सामना करें, अपनी पूरी क्षमता का उपयोग करते हुए उन चुनौतियों से जूँझें और इस दौरान अपने अंदर अन्य नई खूबियों को विकसित करें। नई तरकीबें सोचें

और उनका प्रयोग करें।

हर मुसीबत व चुनौती हमें कुछ नया सीखने के लिए तथा आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करती है। जब हमारे जीवन में हमारा पुराना कौशल व नया ज्ञान मिलता है तो मन में नए आत्मविश्वास का सृजन होता है यही हमारे लिए सबसे उपयोगी होता है, जो हमें मुसीबतों के पार ले लाता है।

मुसीबतों के प्रति हमारा दृष्टिकोण क्या है, यह भी बहुत महत्वपूर्ण होता है। हम मुसीबतों को किस रूप में देखते हैं, वे हमारे लिए कितनी बड़ी व कितनी छोटी हैं—उन्हें देखने का यह नकारात्मक नजारिया ही मुसीबतों को विकराल कर देता है और छोटी—सी चीज हमारे लिए मुसीबत का पहाड़ बन जाती है, इसलिए अपने नजरिए को सुधारने, अपने दृष्टिकोण को सही करने की जरूरत है, ताकि हम यथार्थ से रुबरु हो सकें।

मुसीबतें कभी कहकर नहीं आती और न कभी बताकर हमारा दरवाजा खटखटाती है, इसलिए जब मुसीबतें सामने हों, तो 'अब क्या होगा', यह सोचना चाहिए। हमारी ओर से उठाया गया—पहला सही कदम ही मुसीबतों पर भारी पड़ सकता है और हमारे आत्मविश्वास को बढ़ा सकता है।

जब मुसीबतें व चुनौतियां हमारी ओर तेजी से बढ़ रही हों, तो उस समय अपने पैर पीछे हटाने या उनसे पीछा छुड़ाकर भाग जाने से समस्याओं का हल नहीं निकलता। इसलिए हमेशा याद रखें कि भागना किसी भी समस्या का हल नहीं है; जबकि शांति के साथ विवेकपूर्ण उपाय, हमारा साहस, धैर्य और हमारी सक्रियता ही वे उपाय हैं, जो हमें मुसीबतों से जूँझने में मदद करते हैं। अतः मुसीबतों व मुश्किलों से डरकर नहीं, बल्कि डटकर मुकाबला करना हमें आना ही चाहिए।



पाकिस्तान में गुरु नानकदेव की स्मृतियाँ

पाकिस्तान के पंजाब में स्थित शहर ननकाना साहिब का नाम ही गुरु नानकदेव जी की जन्मस्थली के नाम पर पड़ा है। इसका पुराना नाम 'राय भई दी तलवंडी' था। लाहौर से 80 किमी दक्षिण-पश्चिम में स्थित यह गुरुद्वारा विश्वभर में सिखों का प्रसिद्ध तीर्थस्थल है। महाराजा रणजीत सिंह ने गुरु नानकदेव के जन्म स्थान पर गुरुद्वारे का निर्माण करवाया था। यह भारत में गुरदासपुर स्थित डेरा बाबा नानक से भी दिखाई देता है। गुरुपर्व पर रंग-बिरंगी रोशनियों से जगमग करता यह गुरुद्वारा एक अनूठा नजारा प्रस्तुत करता है।

ननकाना साहिब के आसपास के कुछ अन्य गुरुद्वारे नानकदेव जी के जीवन के महत्वपूर्ण पहलुओं से संबंधित हैं। कहते हैं कि जिस विद्यालय में नानकजी पढ़ने जाते थे वहां आज पट्टी साहिब गुरुद्वारा सुशोभित है। ननकाना साहिब के निकट एक अन्य गुरुद्वारा करतारपुर साहिब भी नानकदेव की स्मृतियों को गहराई से संजोये हुए हैं।

कहा जाता है कि नानक जी ने यहां करतारपुर नगर बसाया था और वे 17 साल यहां रहे। यहां उन्होंने कृषिकर्म भी किया था। यहां 1532 ई. में भाई लहिणा आपकी सेवा में आये तथा सात वर्ष की समर्पित सेवा के बाद गुरु नानकदेव जी के उत्तराधि आकारी बने, गुरु ने उन्हें अर्जुनदेव नाम दिया। इसी स्थान पर गुरुनानक देव जी 22 सितम्बर 1539 को परम ज्योति में लीन हुए।

इसके अतिरिक्त बटाला स्थित श्री कंध साहिब गुरुजी के विवाह की स्मृतियां संजोए हैं। कहा जाता है कि संवत् 1544 में गुरु नानकदेवजी की बारात जहां ठहरी थी वह एक कच्चा घर था, जिसकी एक दीवार का हिस्सा आज भी शीशे के फ्रेम में गुरुद्वारा श्री कंध साहिब में सुरक्षित है। इसके अलावा आज यहां गुरुद्वारा डेरा साहिब है, जहां श्री मूलराज खत्री जी की बेटी सुलक्खनी देवी को नानक देव जी सुल्तानपुर लोधी से बारात लेकर ब्याहने आये थे। यहां पर माता सुलक्खनी देवी जी तथा

नानकदेव जी की शादी की रस्में पूरी हुई थीं। इसी तरह पंजाब लुधियाना में गुरुद्वारा गजघाट वहां पर निर्मित है जहां गुरुनानक देव 1515 ईस्यी में आये थे। उस समय यह सतलुज दरिया के किनारे पर स्थित था। उस समय लुधियाना के नवाब जलाल खां लोधी अपने दरबारियों सहित गुरु नानकदेव की शरण में आए व आग्रह किया कि हे सच्चे पातशाह! यह शहर सतलुज दरिया किनारे स्थित है। इसके तूफान से शहरवासियों को काफी नुकसान उठाना पड़ रहा है। आप इस समस्या से निजात दिलायें। गुरु महाराज ने कहा कि आप सभी सच्चे मन से ईश्वर से प्रार्थना करें। आपकी समस्या हल हो जाएगी और लुधियाना नाम का डंका दुनिया में गूंजेगा। गुरु साहिब के कहे अनुसार आज लुधियाना शहर की घनी आबादी है और सतलुज दरिया वहां से सात कोस दूर है। वहां दरिया घाट पर बना गुरुद्वारा, गज घाट के नाम से विख्यात हो गया।

संगरुर में गुरुद्वारा नानकियाना साहिब को

गुरुनानक देव और गुरुहरगोबिन्द जी की चरण छोह प्राप्त है। सोलहवीं शताब्दी की शुरुआत में गुरुनानक देव जी यहां आये थे। करीब एक सदी बाद जब 1616 में गुरु हरगोबिन्द साहिब ने यहां का दौरा किया और गुरु नानक देव जी द्वारा पवित्र किए गए सरोवर की पवित्रता बनाए रखने के लिए यहां गुरुद्वारा साहिब का निर्माण कराया। कहते हैं कि गुरु नानकदेव जी ठहरे थे, वहां उनके पैरों की छाप आज भी मौजूद है। आज वहां एक भव्य गुरुद्वारा बड़ साहिब बना हुआ है। इस गुरुद्वारे में हर अमावस्या और गुरुनानक देव जी के जन्मोत्सव व अन्य गुरुपर्व हर्षोत्तम से मनाये जाते हैं। गुरु नानक देव जी ने अपने साधना काल सबसे अधिक समय सुल्तानपुर लोधी में बिताया। यहां उनसे संबंधित अनेक गुरुद्वारे हैं। इनमें से प्रमुख हैं श्री बेर साहिब। यहां उनके बैठने के स्थल को भोरा साहिब कहते हैं।

कांग्रेस नेताओं के नक्सलियों से सम्बन्ध उजागर

ऐन चुनाव के पहले महाराष्ट्र के कोरेगांव नक्सली हिंसा के मामले की जांच में कांग्रेस के वरिष्ठ नेता दिग्विजय सिंह का नाम सामने आ जाने से राजनैतिक सरगर्मियां जोरों पर है। यह मामला राष्ट्रीय सुरक्षा से जुड़ा है। उल्लेखनीय है कि कांग्रेस पार्टी छत्तीसगढ़ में नक्सलियों को क्रांतिकारी बता चुकी है।

महाराष्ट्र के भीमा कोरेगांव में गत जनवरी में हुये हिंसा में कांग्रेस नेता दिग्विजय सिंह की भूमिका की जांच पुणे पुलिस कर रही थी। इस मामले में जून में गिरफ्तार किये गये एकिटविष्ट रीना विल्सन को वान्टेड नक्सली नेता मिलिन्द टेम्बुटे ने पत्र लिखा था जिसमें कहा गया था कि कई कांग्रेसी नेता हमारी मदद को तैयार हैं। इसी को जांच में लेकर पुलिस ने जब गिरफ्तार माओवादी समर्थक नेताओं प्रकाश उर्फ रितुपन गोस्वामी और सुरेन्द्र गाडलिंग के मोबाइल नम्बरों की खोज खबर ली तो इनमें एक नम्बर पर उनकी जिनसे बात हुयी थी, वह कांग्रेस नेता दिग्विजय सिंह निकला।

सूचना

कृपया आप अपना ई-मेल एवं मोबाइल नम्बर महाकोशल के ई मेल में भेजने का कष्ट करें ताकि महाकोशल संदेश आपको ईमेल पर प्रेषित किया जा सके। — सम्पादक

प्रकाशक एवं मुद्रक डॉ. किशन कछवाहा द्वारा विश्व संवाद केन्द्र, महाकोशल, प्लाट नं-1, म.नं. 1692, नवआदर्श कालोनी, के लिये ओम आफसेट प्रिन्टर्स 239, यूनियन बैंक के सामने बल्देवगांव चौक, जबलपुर द्वारा मुद्रित। प्रकाशन स्थान—विश्व संवाद केन्द्र प्लाट नं 1, म.नं. 1692 नवआदर्श कालोनी गढ़ा मार्ग जबलपुर मध्यप्रदेश। संपादक—डॉ. किशन कछवाहा।

Email:-vskjbp@gmail.com,

www.vskjabalpur.org

kishan_kachhwaha@rediffmail.com